भारतीय ग्रन्थमाला—संख्या २५

मातृ-वन्दना

Matri-Vandnā.

"जननी जन्मभूमिश्च,
स्वर्गादपि गरीयसी।"

'Bhagwat'

'भगवत'

भारतीय ग्रन्थमाला—संख्या २५

मातृ-वन्दना

Matri - Vandnā.

लेखक

पंडित भगवत प्रसाद शुक्ल, साहित्य शास्त्री

~~Bhawat~~
Bhagwat Prasād Shukal.

प्रकाशक

भारतीय ग्रन्थमाला, बृन्दाबन

प्रथम संस्करण]   सन् १९४२ ई०   [मूल्य छः आने

1942

प्रकाशक—
श्री भगवानदास केला
व्यवस्थापक, भारतीय ग्रन्थमाला
बृन्दावन

मुद्रक—
श्री गया प्रसाद तिवारी, बी. काम.,
नारायण प्रेस,
नारायण बिल्डिंग्स, प्रयाग ।

निवेदन

माँ! माँ!! प्यारी माँ!!! तेरी स्मृति मात्र से मेरा हृदय पुलकायमान हो जाता है। वर्तमान दुखों का अन्त और उज्ज्वल आशामयी भविष्य का विश्वास हो जाता है। किन शब्दों में तुझे सम्बोधन करूँ, कैसे तेरी सेवा करूँ किस रीति से तेरी भक्ति और उपासना करूँ जो कोई इस विषय में मुझे सहायता देगा, उसका मैं अनेकशः कृतज्ञ हूंगा। जो शिक्षक मुझे इस सम्बन्ध में सदुपदेश करेगा, जो लेखक या कवि मेरे हृद्गत भावों को प्रकट करने में पथ-प्रदर्शक बनेगा, उसका मैं चिरकाल तक ऋणी रहूंगा!

माँ की माँ! पूज्यतम् मातृभूमि! स्वर्गादपिमान्या जन्मभूमि! जो प्राकृतिक दृश्य—बन, उद्यान, पहाड़, कन्दराएँ मेरे मन में तेरी पूजा के भावों का संचार करेंगी, उनका मैं बारम्बार दर्शन करूंगा। जो समुद्र, झील, नदी-नाले अपनी उल्लसित तरङ्गों से मेरे अबोध हृदय में तेरी स्मृति करायेंगे, उनका कल्याणकारी सन्देश सुनने के लिए मैं सहस्त्रों मील की यात्रा सहज ही कर लूंगा। जो पुस्तक तेरा विराट रूप दर्शाकर मुझे तेरी भक्ति का ज्ञान करायेगी और तेरे गौरव-गीत गाना सिखायेगी, उसे मैं वेद, पुराण, क़ुरान, बाइबिल समस्त सांसारिक एवम् धार्मिक, ऐहिक और पारलौकिक ग्रन्थों में किसी से भी कम न समझूंगा। उसे मैं हृदय से लगाऊंगा और मस्तिष्क में धारण

करूंगा। मेरी यह धारणा है कि ऐसी कृति मेरे मानवी शरीर को मनुष्यत्व प्रदान करेगी, मुझे अपने धर्म के लिए, देश-सेवा और मातृ-वन्दना के लिए, जीना बतायेगी और मरना सिखायेगी; मुझे जीते हुए को जीवन प्रदान करेगी और मरने पर शान्ति और संतोष दिलायेगी।

× × ×

इस पुस्तक की भावना मेरे जीवन में ओत-पोत है। मैं जब छः वर्ष का था तो हिन्दी की पहली पुस्तक में मैंने एक कविता पढ़ी थी, जिसकी टेक कुछ इस प्रकार थी 'मेरी प्यारी अम्मा, मेरी जान अम्मा'। यह कविता मैंने जल्दी ही याद कर ली थी। इसे अपनी पूज्य माता जी को सुनाने में मुझे बड़ा आनन्द आता था। कालान्तर में, मैं बड़ा हुआ, मुझे माँ की सेवा करने की धुन हुई, पर मेरे कुछ योग्यता प्राप्त करने से पूर्व ही प्यारी मां का देहान्त हो गया। फिर तो मुझे अपना जीवन भार-स्वरूप प्रतीत होने लगा। मैं मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगा। इस अवसर पर मुझे स्वर्गीय माता जी ने विलक्षण रीति से जननी जन्मभूमि का संदेश दिया। मैं बहुधा शाम सवेरे बस्ती से बाहर, प्रकृति के निकट गया हूँ। अनेक बार जमुना गंगा आदि नदियों के तट पर घूमने का अवसर आया है। कभी-कभी मैं किसी पर्वत की तलहटी में भी फिरा हूँ, राजस्थान की वालुकामयी भूमि में तो निरंतर महीनों रहा हूँ, कुछ समय बम्बई में ठहरना हो गया तो वहाँ समुद्र-तट पर भ्रमण किया है। ऐसे अवसरों पर कभी-कभी मैंने कुछ तुकबन्दियां की हैं, और ऐसा तो अनेक बार हुआ है कि एक जगह बैठ कर मैंने स्वदेश-प्रेम

सम्बन्धी कविता-संग्रह के पाठ का आनन्द लिया है। हाँ, वे कविताएँ छोटी-छोटी और फुटकर थीं, इससे स्थान-स्थान पर प्रवाह में बाधा उपस्थित होने का सा अनुभव हुआ। मन में विचार आया कि क्या ही अच्छा हो यदि किसी एक ही सुकवि की ऐसी कृति मिल जाय जो कम से कम आधे-पौन घन्टे के लिए तो मानसिक भोजन और मातृ-वन्दना का काम दे। इसके लिए मैंने कई सज्जनों से याचना की, पर बहुत समय तक किसी ने मेरी भावना की भूख न मिटायी।

अन्ततः सम्वत् १९७६ वि० में, जब मैं अलीगढ़ में था, मैंने अपने स्थानीय मित्र श्री पंडित ईश्वरीप्रसादजी से इसकी चर्चा की। पंडित जी ने इसकी रचना आरम्भ कर दी। हम दोनों प्रायः प्रति दिन ही मिलते थे। जो रचना - कार्य होता, उस पर विचार-विनिमय होता। धीरे-धीरे काम पूरा होने को आया। मैंने इसे अपना सौभाग्य समझा; अवश्य ही इसकी भाषा वैसी सरल न थी, जैसी मैं चाहता था। मेरी इच्छा थी कि साधारण योग्यता के व्यक्ति इसे समझ सकें, इसका पाठ करके यथेष्ठ आनन्द ले सकें, और वे इसे आसानी से कंठ भी कर सकें। मैंने इसके रचयिता से यह बात समय-समय पर कही थी, पर मालूम हुआ कि उनके द्वारा कुछ सरल रचना होना कठिन था। अस्तु, पुस्तक छप गयी और क्रमशः इसका एक संस्करण समाप्त भी हो गया। परन्तु इसी समय पंडित ईश्वरीप्रसादजी स्वर्ग सिधार गये। मेरी यह प्रबल इच्छा हुई कि अपने प्रियमित्र की इस प्यारी पुस्तक का दूसरा संस्करण प्रकाशित करूँ, परन्तु पंडितजी के पुत्र श्री हरिश्चन्द्रजी ने इसे स्वयं ही छपाने का विचार प्रकट किया। इससे बात जहां की तहां रह

गयी। पुस्तक छपने का कार्य अनिश्चित काल के लिए स्थगित हो गया।

विगत वर्षों में मैंने फिर समय-समय पर कई मित्रों से ऐसी रचना करने के लिए निवेदन किया। कई एक ने आशा भी दिलायी, पर काम न हुआ। आखिर इस वर्ष जबकि मैं मित्रवर श्री० पंडित दयाशंकरजी दुबे के पास प्रयाग में था, और 'स्वराज्य सोपान' और 'कृष्णकुमारी', आदि के रचयिता मान्यवर श्री० पंडित भगवतप्रसादजी शुक्ल उनके पास रचना-कार्य कर रहे थे, मैंने श्री० शुक्ल जी से इस विषय की चर्चा की। आपको यह विचार बहुत पसन्द आया, और आपने हर्षपूर्वक इसे कार्य-रूप में परिणत कर दिया। आपने उच्च भावनाओं को व्यक्त करते हुए भी भाषा यथा-सम्भव सरल रखने की कृपा की है। मैं इस रचना के लिए आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूं। आशा है, स्वदेश-प्रेमी और मातृ-भक्ति-लीन पाठक इसका यथेष्ठ स्वागत करेंगे। हमारे अनेक बंधुगण नित्य पूजा-पाठ करते हैं। सब अपने-अपने इष्ट देवी-देवता का स्मरण और स्तुति करते हैं। क्या कुछ भावुक जन जननी जन्मभूमि की आराधना और वन्दना करना अपना नित्यकर्म न बनायेंगे। यदि इस प्रकार के भक्ति भाव का प्रचार करने में यह रचना कुछ भी सहायक हुई तो इसके लेखक और प्रकाशक दोनों कृतार्थ हो जायँगे। शुभम्।

विनीत—

भगवानदास केला

विषय-सूची

प्रथम दर्शन

(१)

प्यारी माता जीवन दाता ।
तू सर्वस्व हमारी है ॥

जिसने यह संसार दिखाया, गढ़ी हमारी कांचन काया ।
दाँत न थे तब दूध पिलाया, पाल पोस कर बड़ा बनाया ॥

प्यारी माता जीवन दाता ।
तू सर्वस्व हमारी है ॥

(२)

गा-गा लोरी मुझे सुलाया, था-थैया कह खूब हँसाया ।
सुखी देख मुझको सुख पाया, मानो जग की लूटी माया ॥

प्यारी माता जीवन दाता ।
तू सर्वस्व हमारी है ॥

(३)

जब कभी ताप ने मुझे सताया, खाना-पीना जिसे न भाया ।
संकट-मोचन जाप कराया, ताप गया जी में जी आया ॥

प्यारी माता जीवन दाता ।
तू सर्वस्व हमारी है ॥

(४)

मल मूत्र उठा मुझको नहलाया, कपड़ा साफ मुझे पहनाया ।
मुझे खिलाकर जिसने खाया, हित मेरा ही सदा मनाया ॥
प्यारी माता जीवन दाता ।
तू सर्वस्व हमारी है ॥

(५)

हाथ पकड़ चलना सिखलाया, बड़े प्रेम से मुझे पढ़ाया ।
पढ़कर मैं जब घर को आया, दूध-भात तब मुझे खिलाया ॥
प्यारी माता जीवन दाता ।
तू सर्वस्व हमारी है ॥

(६)

बल, पद, धन जो मैंने पाया, फल सारा है जिसकी दाया ।
प्रेम, क्षमा गुण जिसको भाया, जिसके ऋण ने मुझे दबाया ॥
प्यारी माता जीवन दाता ।
तू सर्वस्व हमारी है ॥

(७)

ममता माता की है न्यारी, सन्तति उसे प्राण से प्यारी ।
उपकार बोझ सिर जिसका भारी, कहा न जाता जड़ मति हारी ॥
प्यारी माता जीवन दाता ।
तू सर्वस्व हमारी है ॥

× × × × ×

(८)

जय माँ, जय जय मातृभूमि ।

तू सब को मातु हमारी है ॥

माँ की माँ हम सब की माता, बड़ी स्वर्ग सम जग यश गाता।
कण-कण तेरा मुझे सुहाता, देख तुझे मैं अति सुख पाता ॥

जय माँ, जय जय मातृभूमि ।
तू सब की मातु हमारी है ॥

(९)

शरीर भव्य भारत है प्यारा, मुख चन्दा की छवि से न्यारा ।
पर्वत, दृश्य, नदी, जल धारा, शोभा देख-देख मन हारा ॥

जय माँ, जय जय मातृ भूमि ।
तू सब की मातु हमारी है ॥

(१०)

कन्याकुमारी पैर कहाता, धो समुद्र जिसको सुख पाता ।
हिमाचल शिर संसार लुभाता, कीट मुकुट शिमला मन भाता ॥

जय माँ, जय जय मातृभूमि ।
तू सब की मातु हमारी है ॥

(११)

सिन्ध ब्रह्म दो हाथ बुलाते, आवे जिसको हृदय लगाते।
विन्ध्याचल हैं कमर कहाते, महिमा जिनकी सुर मुनि गाते॥

जय माँ, जय जय मातृ भूमि।
तू सब की मातु हमारी है॥

(१२)

गंगा, सिन्धु, गोदावरि, जमना, कावेरी, ब्रह्मा का बहना।
गोलाकार बना मणि-गहना, हृदय-हार पा जिसको पहना॥

जय माँ, जय जय मातृभूमि।
तू सब की मातु हमारी है॥

(१३)

आर्यावर्त विशाल हमारा, बटा प्रान्त में न्यारा न्यारा।
पर अखंड सारा का सारा, बना जगत में सब का प्यारा॥

जय माँ, जय जय मातृभूमि।
तू सब की मातु हमारी है॥

(१४)

प्रान्त-प्रान्त के भाई-भाई, हिन्दू, मुसलिम, सिख, ईसाई।
बौद्ध, पारसी, जैन, कहाई, सभी लाल हैं, भारत माई॥

जय माँ, जय जय मातृभूमि।
तू सबकी मातु हमारी है॥

(१५)

हिन्दुस्तानी हम कहलाते, जन्में यहीं यहीं मर जाते ।
एक साथ सब दुख सुख पाते, महिमा माँ की हम सब गाते ॥
जय माँ, जय जय मातृभूमि ।
तू सबकी मातु हमारी है ॥

(१६)

हैं अनेक, पर एक बने हम, फूल - हार की भाँति गुहे हम ।
मिश्री-माखन मिले बनें हम, भाई को न अछूत कहें हम ॥
जय माँ, जय जय मातृभूमि ।
तू सबकी मातु हमारी है ॥

(१७)

देशी राज्य निवासी सारे, कभी न हमसे होंगे न्यारे ।
रवि - प्रकाश क्या न्यारे न्यारे, देह - सांस सम हम वे सारे ॥
जय माँ, जय जय मातृभूमि ।
तू सबकी मातु हमारी है ॥

(१८)

चालिस कोटि जिसे हों बालक, गुणी, शील, बलशाली पालक ।
विघ्न विनाशक अरि दल घालक, सब विधि लायक, जग संचालक ॥
जय माँ, जय जय मातृभूमि ।
तू सबकी मातु हमारी है ॥

× × ×

(१९)

है कौन हिन्दवासी, खेला न गोद खासी।
काटी न दुःख फाँसी, आपत्ति भी विनाशी॥

जय माँ, जय जय मातृभूमि।
तू सबकी मातु हमारी है॥

(२०)

अन्न, घी, खिलाया, जल, दूध, है पिलाया।
फल-मधुर-रस चखाया, हमको बली बनाया॥

जय माँ, जय जय मातृभूमि।
तू सबकी मातु हमारी है॥

(२१)

कपास, ऊन पाया, कपड़ा सुघर बनाया।
यह देह सब सजाया, जाड़ा ज़रा न आया॥

जय माँ, जय जय मातृभूमि।
तू सबकी मातु हमारी है॥

(२२)

मल, मूत्र, वह हमारे, सहती दुखी न होती।
जब मौत सिर पुकारे, तब साथ साथ सोती॥

जय माँ, जय जय मातृभूमि।
तू सबकी मातु हमारी है॥

(२३)

उपकार माँ के सारे, सब रोम में हमारे।
गिनकर उन्हें हैं हारे, शत अंश भी न तारे॥

जय माँ, जय जय मातृभूमि।
तू सबकी मातु हमारी है॥

(२४)

उपकार देश पर क्या, परदेश से जो आये।
विज्ञान ज्ञान क्या क्या, दिल की मुराद पाये॥

जय माँ, जय जय मातृभूमि।
तू सबकी मातु हमारी है॥

(२५)

इसी लिए कहाती, सब की सजीव माता।
सब को सदा सुहाती, सुख - शान्ति - ज्ञान - दाता॥

जय माँ, जय जय मातृभूमि।
तू सबकी मातु हमारी है॥

द्वितीय दर्शन

(१)

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

नयनों की ज्योति हमारी तू है, प्राणों की सांस हमारी तू है।
चैतन्य शक्ति सुखकारी तू है, मुख में जीभ हमारी तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(२)

व्रज के कृष्ण-मुरारी तू है, मोहम्मद-उर्रसूल हमारी तू है।
ईसा-मसीह सुखारी तू है, गौतम-तप-व्रतधारी तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(३)

सूरज, गगन-बिहारी तू है, चन्दा की छबि प्यारी तू है।
जल, समुद्र, चितहारी तू है, शैल-हिमाचल भारी तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(४)

आकाश तथा तारागण तू है, चपला इन्द्रधनुष घन तू है।
पर्वत, नदी, कुएँ, सर तू है, गिरजा, मन्दिर, मसजिद तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(५)

जलचर, नभचर, थलचर तू है, अचर सचर सब जग के तू है।
दृष्टि जहाँ तक जाती तू है, जिधर देखता, तू ही तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(६)

वेद, कुरान, बाइबिल तू है, राम, रहीम, ईशु, प्रभु तू है।
दुनिया के सब मज़हब तू है, नहीं दीखता वह भी तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(७)

अजर अमर सुखशाली तू है, दिव्यरूप बलशाली तू है।
संसार बाग़ की माली तू है, आदि-शक्ति श्रीकाली तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(८)

वस्त्राभूषणधारी तू है, क्रीट-मुकुट शिर धारी तू है।
कोटि काम छबिहारी तू है, बलि जाऊँ, मनहारी तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(९)

नयन-कमल-दलवाली तू है, कोकिल मृदु स्वरवाली तू है।
जगजेठी गुणवाली तू है, अभिमान न रखनेवाली तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(१०)

विश्व-गुरू यशवाली तू है, मोह मिटानेवाली तू है।
सन्मार्ग बतानेवाली तू है, द्वेष न रखनेवाली तू है॥

भारत मातु हमारी तु है।
प्राणों से भी प्यारी तु है॥

(११)

सभ्य बनानेवाली तू है, ज्ञान सिखानेवाली तू है।
दुख दूर भगानेवाली तू है, चैतन्य करानेवाली तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(१२)

अन्न खिलानेवाली तू है, जल मधुर पिलानेवाली तू है।
कन्द-मूल-फलवाली तू है, धन, मान दिलानेवाली तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(१३)

धर्म हमें सिखलाती तू है, कर्मयोग बतलाती तू है।
योग-युक्ति समझाती तू है, न्याय-नीति-गुण गाती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(१४)

भौतिकवाद पढ़ाती तू है, उन्नतिशील बनाती तू है।
उत्साह बढ़ा सुख पाती तू है, जीवन-ज्योति जगाती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(१५)

पुण्यस्थली हमारी तू है, क्रीड़ास्थली हमारी तू है।
कर्मस्थली हमारी तू है, धर्मस्थली हमारी तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(१६)

आत्मा को नहीं भुलाती तू है, उसका ज्ञान कराती तू है।
ऊँचा उसे उठाती तू है, ईश्वर में उसे मिलाती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(१७)

तप में हमें लगाती तू है, त्याग-तत्व बतलाती तू है।
शक्ति अपार दिलाती तू है, मुख में तेज जगाती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(१८)

षट्-ऋतु छटा दिखाती तू है, शीत, ताप, जल लाती तू है।
क्या रूप अनूपम पाती तू है, कमनीय कान्ति मन भाती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(१९)

वस्त्राभूषण देती तू है, पाल हमें बल देती तू है।
प्राण दान जग देती तू है, ज्ञान मान यश देती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(२०)

भोजन हमको देती तू है, ताप सभी हर लेती तू है।
कर्मनिष्ठ कर देती तू है, अन्त मुक्ति-फल देती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(२१)

आर्यावर्त कहाती तू है, भारत नाम धराती तू है।
मृत्युलोक बन जाती तू है, हिन्दुस्तान कहाती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(२२)

नर में नारायण तू है, पशु में गाय सुहावन तू है।
ऋतु बसन्त मन भावन तू है, चैत्र मास शुभ पावन तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(२३)

जग में उत्कृष्ट कहाती तू है, विश्व-प्रेम सिखलाती तू है।
मानव-धर्म बताती तू है, प्रेम-मार्ग दर्शाती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(२४)

स्वार्थ न मन में लाती तू है, परमार्थ-मार्ग बतलाती तू है।
'वसुधैव कुटुम्बकम्' गाती तू है, सब में सम प्रेम बताती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(२५)

रिपु को मित्र बताती तू है, मन में मैल न लाती तू है।
जग का भला मनाती तू है, परहित समय बिताती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(२६)

जग को सन्देश सुनाती तू है, "झगड़ो मत" बतलाती तू है।
"उदार बनो" समझाती तू है, "प्यार करो" सिखलाती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(२७)

प्रेम-प्रकाश दिखाती तू है, आशा-सूर्य बताती तू है।
अहिंसा पाठ पढ़ाती तू है, पशु-बल बुरा बताती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(२८)

'सन्मार्ग चलो' बतलाती तू है, 'कष्ट न दो' सिखलाती तू है।
प्रेम-शस्त्र-गुण गाती तू है, इसमें विजय बताती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(२९)

'लड़कर मरो न' कहती तू है, 'नरपशु बनो न' कहती तू है।
'फल प्रेम चखो सब' कहती तू है, 'सुख सार इसीमें' कहती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

(३०)

जग का भला मनाती तू है, इसी लिए तो भाती तू है।
आनन्द भाव उपजाती तू है, उपदेश-गीत जब गाती तू है॥

भारत मातु हमारी तू है।
प्राणों से भी प्यारी तू है॥

तृतीय दर्शन

(१)

मुख चन्द्र माँ की छटकी,
छवि चाँदनी निराली।
शुभ रूप मृदु मनोहर,
कमनीय कांतिवाली ॥

काश्मीर भाल कुंकुम केसर तिलक लगा है।
श्रीगङ्ग का हृदय पर क्या हार नव डला है ॥
सिंहल प्रणाम करता युग चरण कमलवाली।
चरणामृत पुनीत पीकर है सिन्धु कीर्तिशाली ॥

महिमा महान तेरी, क्रीट मुकुटवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली ॥

(२)

रक्षक स्वयं हिमाचल तब भय भला कहाँ है।
कलकल निनाद करती बहती नदी जहाँ है ॥
सिन्धु ब्रह्मपुत्रा गौरव गुमानवाली।
प्राकृतिक दृश्य वाली विस्तृत अरण्यवाली ॥

राजधानियाँ जहाँ हों, प्राचीन कीर्तिशाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली ॥

(३)

राम श्याम को भी था गोद में खिलाया।
वाल्मीकि व्यास कवि ने गाकर जिसे सुनाया॥
मान-दण्ड थल का गिरिराज तेजशाली।
कैलाश हो जहाँ पर जिसकी छटा निराली॥
अलकापुरी जहाँ हो, वह मेघदूतवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(४)

नाना प्रकारवाले शुभ वृक्ष सोहते हैं।
काले हिरन जहाँ पर सब ओर जोहते हैं॥
औषधि अनेक होतीं जो शिलाजीतवाली।
गाय बैलवाली मणि रत्न लालवाली॥
फैली विशाल चादर, जो श्वेत बर्फवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(५)

श्रीनगर है कहाता काश्मीर राजधानी।
जो स्वर्ग सा सुहावन निर्मल समीर पानी॥
यह भूमि है कहाती कवि ज्ञानवानवाली।
हिन्द का सुमस्तक ऊँचा उठानेवाली॥
पंडित प्रवर पतंजलि से भाष्यकार वाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(६)

पञ्जाब पाँच नदियों का प्रान्त है कहाता।
वीर-व्रत निभाना जिसको सदैव भाता॥
कुरुक्षेत्र नगरी है प्राचीन मानवाली।
दिल्ली ने बनाया इतिहास कीर्तिशाली॥
बैठा यहाँ जो गद्दी, उसने सुख्याति पाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(७)

विदेश से जो आये शत्रू यहाँ लड़ाके।
मोरचे पे पाया था जाट सिक्ख बाँके॥
सेना विशाल रिपु के छक्के छुड़ानेवाली।
सम्मान देश-हित थी कुरबान होनेवाली॥
सामवेद की ऋचाएँ, पढ़ने पढ़ानेवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(८)

गुरु नानक ने यहाँ पर था अमर नाम पाया।
सिक्ख धर्म प्रकटा सबको गले लगाया॥
गुरु गोविन्दसिंह ने भी यश और ख्याति पाली।
बलिदान की सिखाकर शिक्षा नयी निराली॥
परहित किया है जिसने, सुख शान्ति मोक्ष पाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(९)

रणजीतसिंह ने भी रण में सुयश कमाया।
हरीसिंह नलवा ने कुछ काम कर दिखाया॥
इन्द्रप्रस्थ की थी निखरी छटा निराली।
हस्तिनापुर ने जलाली सुख दीप की दिवाली॥
भीष्म भी यहाँ थे, व्रतवीर वीर्यशाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(१०)

लवपुरी भी यहाँ थी श्री राम-पुत्रवाली।
थी तक्षशिला नगरी जिसकी छटा निराली॥
संसार को खुशी से गुण ज्ञान देनेवाली।
तू धन्य थी जगत से कुछ भी न लेनेवाली॥
सबको खिला पिलाकर, फिर खाने पीनेवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(११)

कौमारभृत्य, पाणिनि, चाणक्य ने थी पाई।
शिक्षा यहीं जिन्होंने जग ख्याति है कमाई॥
ब्रह्मावर्त देशवाली यह भूमि पुण्यशाली।
मन्दिर सुवर्णवाली सिक्खों के तीर्थवाली॥
जगती सदा रही तू, जग को जगानेवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(१२)

आयुर्वेद का चरक ने निर्माण जो किया था।
शल्य का सुश्रुत ने सिद्धान्त जो लिया था॥
वे सब हुए यहीं पर विद्वान वीर्यशाली।
जग में नहीं अभी भी उनसा है कर्तिशाली॥
उपमा न ढूँढ़े मिलती, तेरे समानवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांति वाली॥

(१३)

लाजपतराय था कहाता पंजाब सिंह प्यारा।
धन, धाम, प्राण जिसने सब देश पर है वारा॥
हुँकार ने थी जिसकी मुरदों में जान डाली।
कर्त्तव्य कर दिखाया शक्ती अपूर्व पाली॥
शान मान रक्खी, थी लाज भी बचाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(१४)

जमुना तट खड़े हों देखें हमें दिखेगा।
राजस्थान दाएँ कर पर हमें मिलेगा॥
वीरों की जन्मदाता राणा प्रतापवाली।
वेदी स्वतन्त्रता पर जिसने सभी चढ़ाली॥
इस भूमि का न कोई, थल वीरता से खाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(१५)

कवि चन्द ने था गाया फिर भी न पार पाया।
अथाह यश समुन्दर जल की न थाह पाया॥
फिर लेखनी कहाँ है ऐसी सुशक्तिशाली।
खींचें जो वीरता का वह चित्र भाग्यशाली॥
धर्म की धरा यह, रक्षा करानेवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(१६)

कवि माघ की कहाती यह जन्मभूमि प्यारी।
पद्मिनी और दुर्गा जन्मी जहाँ थीं नारी॥
मीरा यहाँ हुई थी गिरिधर गोपालवाली।
विष को पचाया जिसने पीकर सुभक्ति प्याली॥
भक्ती अपार करके जिसने सुमुक्ति पाली
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(१७)

संयुक्तप्रान्त ही है ब्रह्मर्षि देश प्यारा।
तपभूमि जो कहाती तप का जिसे सहारा॥
मथुरा विशाल नगरी श्रीकृष्णचन्द्रवाली।
अयोध्या यहीं बसी है श्रीरामचन्द्रवाली॥
अवधभूमि सच में है परम भाग्यशाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(१८)

वाल्मीकि आदि कवि का आश्रम रहा यहाँ पर।
आदि काव्य की भी रचना हुई जहाँ पर॥
कविश्रेष्ठ सूर तुलसी कविवर कबीरवाली।
छाई जगत में जिनकी यश की प्रकाश लाली॥
ज्ञान रस की जिन्होंने जग को पिलायी प्याली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(१९)

प्रयाग यज्ञभूमी है तीर्थराज प्यारा।
यमुन गङ्ग सङ्गम होता जहाँ है न्यारा॥
काशी प्रसिद्ध नगरी भगवान शम्भुवाली।
संस्कृत का समुज्वल शुभ ज्ञान देनेवाली॥
धर्म की पताका ऊँची उठानेवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(२०)

मोतीलाल नेहरू माँ का परम पुजारी।
धन, धाम, पुत्र, पत्नी, कन्या सभी दुलारी॥
माँ पर किया निछावर गुण ज्ञान मानवाली।
हमको बतायी जिसने थी राह त्यागवाली॥
जिस लाल की अभी भी फैली सुकीर्ति लाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(२१)

बिहार प्रान्त कैसा मन मोहता हमारा।
मिथिला महात्म्य हमको लगता परम पियारा॥
सीता यहाँ हुई थी भगवान रामवाली।
चाणक्य ने जहाँ पर नवनीति थी निकाली॥
दर्शनशास्त्र का अनूठा शुभ ज्ञान देनेवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(२२)

विश्वविद्यालय यहाँ था नालन्द का सुपावन।
ज्ञान-जल जहाँ था बहता सदा सुहावन॥
पाटलिपुत्र नगरी थी मान शानवाली।
अशोक राज की थी नगरी सुकीर्तिशाली॥
लुम्बिनी थी आगे वह बुद्धदेववाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(२३)

बङ्गाल में प्रकृति ने कैसी छटा निखारी।
है शक्ति की उपासक यह पुण्यभूमि सारी॥
बाणभट्टवाली, चैतन्य भक्तवाली।
विवेकानन्द, वंकिम, श्री रामतीर्थवाली॥
रवींन्द्र ने जहाँ पर कविता बधू सजा ली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(२४)

विद्यापीठ ने निकाले नवद्वीप के निराले।
पण्डित प्रवर धुरन्धर नैयायिक कहाने वाले ॥
मिताक्षरा जहाँ रची थी हिन्दू विधानवाली।
सर्वत्र देश में है सम्मान पानेवाली ॥
सबको सिखायी जिसने शुभ कर्म की प्रणाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली ॥

(२५)

चित्तरंजन सा जहाँ पर था देशभक्त जन्मा।
सबने उसे था माना आदर्श पुण्यकर्मा ॥
सेवा - धर्म का व्रती बन सब आयु ही बिताली।
सुख सुलभ त्याग जिसने निष्काम वृत्ति पाली ॥
माँ के सुसेवकों की सेना बड़ी सजाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली ॥

(२६)

मध्यभारत में बसा है मालव प्रदेश प्यारा।
ज्योतिष में जगत था जिससे समस्त हारा ॥
माहिष्मती उज्जयनी धारा सुधर्मवाली।
बाराहमिहिरवाली कवि कालिदासवाली ॥
सरस्वती के उपासक श्री भोजराजवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली ॥

(२७)

बुँदेलखंड में बस, शिल्प ही नहीं था।
सब वीर थे यहाँ पर कायर कोई नहीं था॥
यह भूमि कर्मवाली थी छत्रसालवाली।
बागडोर जिसने थी कर्म की सम्हाली॥
हिन्दी को सदा थी यह मान देनेवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(२८)

मध्य-प्रदेश के बन पर्वतों की शोभा।
थी धन्य, राम लक्ष्मण सीता का चित्त लोभा॥
नर्मदा जहाँ बही है दण्डकारण्यवाली।
जिससे मिला हुआ है विदर्भ कीर्तिशाली॥
भवभूति, दण्ड, भारवि, अजंता गुफायेंवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(२९)

महाराष्ट्र खूब फैला जा सिन्ध से मिला है।
शिवाजी सा धर्म-रक्षक हमको यहाँ मिला है॥
मोरोपन्त, तुकाराम, रामदासवाली।
एकनाथ, नामदेव आदि भक्तिवाली॥
हिन्द के विशाल भाल तिलक-तिलकवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(३०)

सिन्ध है कहाता अकबर का जन्मदाता।
इतिहास उच्च स्वर से जिसके गुणों को गाता॥
सौराष्ट्र भूमि यह है श्रीकृष्णचन्द्रवाली।
प्रख्यात जो जगत में प्रभासतीर्थवाली॥
गुजरात धन्य भूमी, व्यवसाय-वृत्तिवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(३१)

महात्मा गाँधी ने जहाँ पर शुभ जन्म ज्ञान पाया।
अहिंसा का जिन्होंने संदेश शुभ सुनाया॥
सच, शान्ति की जिन्होंने नवनीति है निकाली।
त्यागा समस्त वैभव लंगोटी तन लगा ली॥
हृदय-सम्राट् की उपाधी, जिसने यहाँ कमाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(३२)

गुजरात ने सिखाया उपकार - कर्म करना।
धन को कमा-कमाकर व्यय धर्म अर्थ करना॥
दयानन्द, नरसी, अक्खा से भक्तवाली।
गिरिनार से मनोहर उज्ज्वल सुतीर्थवाली॥
दक्षिण में मिलेगा, द्राविड़ सुशीलधारी।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(३३)

बम्बई ने जगत में व्यापार कर दिखाया।
दादाभाई ने जहाँ से सब देश को उठाया॥
तू सत्य ज्ञानवाली अखण्ड रूपवाली।
षट्-ऋतु, समुद्रवाली, भाषा अनेकवाली॥
अनेक धर्मवाली, विवेक बुद्धिवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(३४)

समुद्र-तट अहाता मद्रास का बसा है।
केरल ने जहाँ पर तप से सुतन कसा है॥
यह भूमि है कहाती केरल पुराणवाली।
वैदिक सभ्यता है फैली जहाँ निराली॥
धन्य भूमि प्यारी, श्रीशंकराचार्यवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर, कमनीय कांतिवाली॥

(३५)

तीन सौ वर्ष तुलसी से पूर्व शुभ सुहावन।
तामिल में बनाया कम्बर ने था रामायण॥
शिवकान्ती तीर्थवाली एनीबीसेंटवाली।
मैसूर प्रान्तवाली शुभ आंध्र देशवाली॥
कर्नाटक पुण्यभूमि गजचन्दनादिवाली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(३६)

ब्रह्म प्रदेश सबका है लाड़ला दुलारा।
पेट्रोल, तेल मिट्टी का हमको सदा सहारा॥
उड़ीसा धन्य भूमि जगन्नाथपुरीवाली।
लंका सुद्वीपवाली नैपाल राज्यवाली॥
भूटान की मनोरम लगती छटा है प्यारी।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

(३७)

भाषा अनेक फूले बहु रँग फूल प्यारे।
सुगन्ध से सुवासित सब मातु भक्त वारे॥
चुन फूल सब गुथा है शुभ हार एक माली।
माँ के हृदय में सबनें हँसकर सुमाल डाली॥
'जय मातृ-भूमि प्यारी' कहकर बजाते ताली।
शुभ रूप मृदु मनोहर कमनीय कांतिवाली॥

चतुर्थ दर्शन

(१)

तुझको सुखी बनाऊँगा ।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

बेजान तुझे माना है जिसने, असभ्य तुझे जाना है जिसने ।
कभी न पहिचाना है जिसने, उसका अज्ञान मिटाऊँगा ॥
मां का स्वरूप दिखलाऊँगा ।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

(२)

खून नसों में दौड़ रहा है, श्वास सुगन्धित निकल रहा है ।
जीवन है मुख बोल रहा है, चैतन्य तुझे नित पाऊँगा ॥
महिमा तेरी गाऊँगा ।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

(३)

हाड़-मांस-मय हँसनेवाली, मन - मन्दिर में बसनेवाली ।
भक्ति-भाव में फँसनेवाली, तुझको नित्य रिझाऊँगा ॥
सुख-शान्ति इसी में पाऊँगा ।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

(४)

पहाड़, नदी इतिहास सुनाते, बीती गाथा शहर बताते।
पेड़ नया सन्देश दिलाते, आशा दीप - जलाऊँगा॥

निराशा निकट न आऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा॥

(५)

रोम रोम में माता मेरी, घट - घटव्यापी माता मेरी।
सुख में दुख में माता मेरी, सदा साथ मैं पाऊँगा॥

दर्शन से सुख पाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा॥

(६)

कवि की सूझ न इसको जानो, जीवित इसे सत्य ही मानो।
शक न करो इसको पहिचानो, सच्ची बात बताऊँगा॥

भ्रम को दूर भगाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा॥

(७)

करूँ आरती थाल सजाकर, चरण पखारूँ स्वागत गाकर।
बैठालूँ मन के आसन पर, आनन्द सुधा बरसाऊँगा॥

नयनों को सफल बनाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा॥

(८)

जल, धूप, दीप, फल, पान फूल, चन्दन, तिल, अक्षत, कन्द-मूल ।
ले माल-प्रेम सुख झूल-झूल, माता को पहिनाऊँगा ॥
पूजूँगा और मनाऊँगा ।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

(९)

कमल, फूल या धूल तुम्हारी, हिमगिरि वन मलयानल भारी ।
गंगातट काश्मीर सुखारी, अपनी नींद गवाऊँगा ॥
बिस्तर वहीं लगाऊँगा ।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

(१०)

रोऊँ, मचलूँ, अपराध करूँ, मनमानी जब साध करूँ ।
तंग करूँ, बकवाद करूँ, तब प्रेम-ताड़ना पाऊँगा ॥
आचरण पुनीति बनाऊँगा ।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

(११)

जब जन्म कर्म-वश पाऊँगा, ईश्वर से यही मनाऊँगा ।
दो जन्म यहीं गुण गाऊँगा, बस भारत-माता चाहूँगा ॥
यों कर्म-चक्र भुगताऊँगा ।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

(१२)

माँ की भी तू माँ कहलाती, स्वर्ग-भूमि से बड़ी कहाती।
दूध पिला मुझको हरषाती, कैसे तुझे भुलाऊँगा ॥

सदा तुझे अपनाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

(१३)

मुझे गोद में सदा खिलाती, जल शीतल भी नित्य पिलाती।
पाल-पोस कर प्राण जिलाती, बल, ज्ञान तुझी से पाऊँगा ॥

धन - यश खूब कमाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

(१४)

मेरे तन को अपने तन से, मेरे मन को अपने मन से।
सदा बढ़ाती धन को धन से, जीवन सुखी बनाऊँगा ॥

तुझ पर सर्वस्व चढ़ाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

(१३)

सब प्रकार के भोजन देती, जीवन भर तू हमको सेती।
अन्त काल शुभ मुक्ती देती, इसे न मैं बिसराऊँगा ॥

दुःख मिटा सुख पाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

(१६)

पाठ ज्ञान के हमें पढ़ाती, विद्या दे आनन्द बढ़ाती।
तन के सारे ताप नसाती, ज्ञानशील बन जाऊँगा॥

तेरे सब ताप मिटाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा॥

(१७)

जल नदियों में सदा बहाती, घास हरी सुंदर उपजाती।
बिछा गोद में उसे सोहाती, कोमल कालीन बनाऊँगा॥

तुझको सुख नींद सुबाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा॥

(१८)

तेरे दुःख को दुःख मानूँगा, तेरे सुख को सुख जानूँगा।
तेरे हित को हित जानूँगा, अनहित नहीं मनाऊँगा॥

आनन्द इसी में पाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा॥

(१९)

पहाड़ हमारी रक्षा करते, बादल वर्षा कर जल भरते।
वृक्ष खिला फल छाया करते, पर-हित जन्म बिताऊँगा॥

यह धर्म खूब समझाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा॥

(२०)

मेरे हित जोती जाती है, दुःख सहकर भी सुख पाती है।
अन्न हृदय से उपजाती है, तुझ पर नित भक्ति बढ़ाऊँगा ॥

तुझ पर मैं क्रोध न लाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊँगा ॥

(२१)

बीमारी जब मुझ को आती, कन्द-मूल, औषधि तू लाती।
मुझे खिला नीरोग बनाती, बल तुझसे मैं पाऊँगा ॥

तुझको न कभी तरसाऊँगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा ॥

(२२)

मकान हृदय पर भव्य बनाती, छाया से अपनी ढकवाती।
वहाँ सेज पर मुझे सुलाती, विश्राम सदा मैं पाऊँगा ॥

तुझको आराम दिखाऊंगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा ॥

(२३)

आपस में नादान झगड़ते, भला बुरा जो नहीं समझते।
व्यर्थ जोश में हाथ रगड़ते, आपस की फूट मिटाऊँगा ॥

सब में मेल कराऊंगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा ॥

(२४)

धर्मावतार ध्रुव, धर्म, इन्द्र, ऋषिवर दधीचि, बलि, हरिश्चन्द्र ।
यदुवंश-विभूषण कृष्णचन्द्र, श्रीरामचन्द्र गुण गाऊँगा ॥

उनको तुझमें ही पाऊँगा ।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा ॥

(२५)

रावण ने देव सताये थे, असुरों के मान बढ़ाये थे ।
राघव ने मार गिराये थे, महिमा उनकी गाऊँगा ॥

सब अत्याचार मिटाऊंगा ।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा ॥

(२६)

श्रीविष्णु हुए कृष्णावतार, वसुदेव-पुत्र, सुर-नर-अधार ।
कँस-क्रूर क्षण में पछार, रणविजयी सदा कहाऊँगा ॥

रिपु को मार भगाऊंगा ।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा ॥

(२७)

आलस्य-मोह-भ्रम जाल तोड़कर, सेज मुलायम शीघ्र छोड़कर ।
मुख विषयों से सदा मोड़कर, उद्योगी बन जाऊँगा ॥

कर्तव्य-क्षेत्र डट जाऊंगा ।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा ॥

(२८)

कठिन कर्म तप तेज तपाकर, यश गौरव धन खूब कमाकर।
माता के चरणों में जाकर, सब कुछ उसे चढ़ाऊँगा ॥

मां को सन्तुष्ट बनाऊंगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा ॥

(२९)

छुआछूत का भूत भगाकर, परदा प्रथा समूल मिटाकर।
ऊँच-नीच का भाव नशाकर, समता-भाव जगाऊँगा ॥

सब में मेल कराऊंगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा ॥

(३०)

अनमेल विवाह, दहेज-कुरीती, इन्हें न रक्खूँगा मैं जीती।
दूँगा चलने नहीं कुनीती, सुखी समाज बनाऊँगा ॥

दुख का सब अन्त कराऊंगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा ॥

(३१)

अज्ञान-निशा का घना अँधेरा, जिसने घर-घर डाला डेरा।
उसे मिटाकर करूँ सबेरा, ज्ञान-सूर्य चमकाऊँगा ॥

सोतों को अभी जगाऊंगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा ॥

(३२)

स्त्री-शिक्षा दिला - दिला कर, प्रेम-मधुर-फल खिला-खिला कर।
आदर्श-चरित-रस पिला-पिला कर, नारी सभी जगाऊंगा॥
सीता सी उन्हें बनाऊंगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा॥

(३३)

काले, गोरे, ऊंच - नीच सब, हो जावेंगे सभी एक अब।
भेद - भाव मिट जावेंगे सब, सब को हृदय लगाऊंगा॥
घृणा न मन में लाऊंगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा॥

(३४)

भूले - बिछुड़े सभी मिलाकर, सब का सुन्दर हार सजाकर।
संगठन - सूत्र में उन्हें लगाकर, माँ को फिर पहिनाऊंगा॥
संघ - शक्ति बन जाऊंगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा॥

(३५)

ज़ंजीर गुलामी की जो सारी, माता को कर रही दुखारी।
काटूंगा प्रण करता भारी, कष्ट करोड़ उठाऊंगा॥
यह देश स्वतंत्र बनाऊंगा।
तब तेरा पुत्र कहाऊंगा॥

पंचम दर्शन

(१)

करो मिल भारत का गुण गान ।

फैला दो घर-घर में भाई मातृ-भक्ति की तान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान ।

(२)

बौद्ध, पारसी या ईसाई,
जैन, सिक्ख सब भाई-भाई ।
हिन्दू, मुसलिम सभी कहाते माता की सन्तान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान ।

(३)

मिल जावें जितनी हैं जाती,
फूट नाश का बीज कहाती ।
प्रेम-भाव से करो एकता माता का सम्मान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान ।

(४)

संयुक्तप्रान्त, ब्रह्मा के बासी,
बंगाली, काश्मीर - निवासी।
प्रेम-भाव मन में उपजाओ भाई के सामान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(५)

माता सब की भारत माता,
जिसे देख मन में सुख आता।
जीवन सफल बनालो रखकर माता का अभिमान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(६)

माता की धूली में जिसने,
खेला, सुख पाया है उसने।
सुखी बनादो माता को तुम सभी पुत्र बलवान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(७)

धर्म - जाति चाहे जो होवे,
मत-भेद भले ही मन में होवे।
माता के हित मिल जाओ सब चीनी-दूध समान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(८)

ऊंच - नीच ज्ञानी - अज्ञानी ,
कृषक, वणिक, व्यापारी दानी।
राजा-रंक-भाव बिसरादो, श्रमजीवी धनवान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(९)

युवा, वृद्ध, बालक, नर-नारी ,
शूरवीर, बाला, सुकुमारी।
भिन्न शरीर भले हों सबके, होवे एक ज़बान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(१०)

मातृ-भक्ति की भंग निराली ,
छानो गहरी, पीलो प्याली।
मतवाले, दीवाने बनकर रखलो माँ की शान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(११)

खाते - पीते जगते - सोते ,
लिखते - पढ़ते हंसते - रोते।
माता के हित को मत भूलो, रहे सदा यह ध्यान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(१२)

माता को मसजिद में पालो,
मंदिर में उसके गुण गालो।
गिरजा में उसको अपनालो, लो उससे निर्वाण ॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(१३)

देह करोड़ों, हृदय एक हो,
मार्ग अनेकों, ध्येय एक हो।
तीर अनेकों, धनुष एकहो, रखो लक्ष्य पर ध्यान ॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(१४)

बीणा, मंजीरा, मृदंग हो,
ढोल, झांझ, डफ और चंग हो।
सबका मिलकर एक राग हो, रहे ताल का ध्यान ॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(१५)

तन, मन, धन, सर्वस्व हमारा,
माता जीवन प्राण अधारा।
चालिस कोट कहो सब मिलकर, जय जय हिन्दुस्तान ॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(१६)

शान मान सम्मान हमारा,
माता ही अभिमान हमारा।
यश-गौरव माता ही अनुपम बनी खान अरु पान ॥

करो मित्र भारत का गुण-गान।

(१७)

सुख दुख में है बड़ा सहारा,
मां बल धीरज शौर्य हमारा।
माता नयनों की तारा है गुण अनेक की खान।

करो मित्र भारत का गुण-गान।

(१८)

प्रेम रूप माता का प्यारा,
मातृहीन सूना जग सारा।
माता के प्रति रखो भावना केवल प्रेम प्रधान ॥

करो मित्र भारत का गुण-गान।

(१९)

माता ने था गोद खिलाया,
भूल गये क्या दूध पिलाया?
कुछ तो उसका बदला दे दो, हो समर्थ बलवान ॥

करो मित्र भारत का गुण-गान।

(२०)

माँ का व्याकुल होकर रोना,
आँसू से मुँह अपना धोना।
देखा जाता हो तो देखो धिक्! पौरुष धिक्! ज्ञान॥

करो मित्र भारत का गुण-गान।

(२१)

चालिस कोट सुतों की माता,
माता की भी है वह माता।
जग की जीवनदाता माता कहां न इसका मान॥

करो मित्र भारत का गुण-गान।

(२२)

ऋण माँ का क्या कभी विचारा,
सिर से नहीं जो टलता टारा।
उसे चुकाने का तो करलो ज़रा एक दिन ध्यान॥

करो मित्र भारत का गुण-गान।

(२३)

ऋण जो थोड़ा थोड़ा दोगे,
बोझ नहीं सिर बढ़ने दोगे।
नहीं अगर ऋण दे सकते हो, दे दो ब्याज महान॥

करो मित्र भारत का गुण-गान।

(२४

माता आधि - व्याधि सब हरती ,
सुख - सम्पत्ति से झोली भरती ।
दुःख मिटा दो उसके चाहे चले जांय यह प्राण ॥
करो मित्र भारत का गुण-गान ।

(२५)

राम, श्याम गोदी में खेलें ,
मां से तुतली बोली बोलें ।
धन्य उन्होंने हरा मातु का था वह बोझ महान ॥
करो मित्र भारत का गुण-गान ।

(२६)

बड़भागी वे सुत कहलाते ,
मात - पिता जिनसे सुख पाते ।
जिसके जीते माँ दुख पावे, वह सुत अधम समान ॥
करो मित्र भारत का गुण-गान ।

(२७)

आपत्ति - मेघ सिर पर मँडरावें ,
गरज - गरज कर भय दिखलावें ।
बनो साहसी डरो न उनसे तभी बढ़ेगा मान ॥
करो मित्र भारत का गुण-गान ।

(२८)

विष के तुल्य फूट - फल जानो,
इसे नाश की जड़ ही मानो।
त्यागो इसको और बचा लो अपना प्यारा प्राण॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(२९)

रानी, राजा, दहला, छक्का,
हारे हैं किससे! बस इक्का।
इसे बना लो विजय-सुयश का साधन एक महान॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(३०)

करो सदा माता की भक्ती,
जब तक हो शरीर में शक्ती।
भक्ती से प्रसन्न तुम कर लो समझो माँ भगवान॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(३१)

सुख में माँ को भूल न जाना,
दुख में माँ का ध्यान लगाना।
दुःख - सर्प को नाश करेगी माता गरुड़ समान॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(३२)

कहीं रहो घर में या वन में,
ध्यान रखो माता का मन में।
जीवन - लक्ष्य बना लो करना माता का कल्याण ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(३३)

सम्पादक, लेखक कहलाते,
नेता हमें मार्ग बतलाते।
समयोचित सब कर्म सिखाते, पाते आदर मान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(३४)

दुःख में धीरज हमें बँधाते।
पर - हित ही में ध्यान लगाते।
हमको केवल सुखी बनाना उनका लक्ष्य महान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(३५)

धन, विद्या, पुरुषार्थ तुम्हारा,
त्याग, शील, परमार्थ तुम्हारा।
सभी व्यर्थ जब माँ दुख पाती, धिक्! सारे बलिदान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(३६)

चक्की में कष्टों की पिस कर,
संकट के दलदल में फँसकर।
मा का दुःख मिटा दो, करके सब अपना कुरबान ॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(३७)

संसार बढ़ा जाता है आगे,
पीछे हमही पड़े अभागे।
बिगड़ा सब सामान हमारा, बने आज बेजान ॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(३८)

सम्पादक, वक्ता, उपदेशक,
कलाकार, ज्ञानी, कवि, लेखक।
उठो, उठो कुछकर दिखला दो रखलो माँ की शान ॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(३९)

शिक्षक के हाथों में सारी,
बागडोर आशा की भारी।
शिक्षा दो ऐसी जिससे हो भारत का कल्याण ॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(४०)

विद्यार्थी समाज कहलाता,
भावी सूत्रधार सुखदाता।
कातर नेत्र लगे हैं उन पर, वे निर्बल के प्राण॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(४१)

नवयुवको, विद्यार्थी उठकर,
डटो शीघ्र कर्तव्य-क्षेत्र पर।
उसके ऋण को शीघ्र चुका दो तुम समर्थ बलवान॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(४२)

आज नरेश देश के सारे,
प्रान्त-प्रान्त में फैले न्यारे।
ज्ञानवान, बलवान कहाते रूपवान, धनवान॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(४३)

मा के प्रति कर्तव्य निभा दो,
मिलकर उसके दुःख मिटा दो।
जीवन सफल बना लो अपना, रखो मूछ की शान॥

करो मिल भारत का गुण-गान।

(४४)

माँ ने तुमको गोद खिलाया,
राजपाट ऐश्वर्य दिलाया।
उसके ऋण को शीघ्र चुकादो तुम समर्थ बलवान ॥

करो मित्र भारत का गुण-गान।

(४५)

माँ नरेश की हो दुख पाती,
नींद पुत्र को क्योंकर आती!
अपना पौरुष बल दिखला दो क्यों सहते अपमान!

करो मित्र भारत का गुण-गान।

(४६)

व्यापारी धन, मान, कमाते,
खाते, पीते, मौज उड़ाते।
विषय वासना में फँस कर वे बने हुए अज्ञान ॥

करो मित्र भारत का गुण-गान।

(४७)

धन, दौलत, बेकार तुम्हारी,
माँ कराहती पड़ी तुम्हारी।
चेतो ज़रा देख लो माँ की खतरे में है जान।

करो मित्र भारत का गुण-गान।

(४८)

तन, मन, धन से या जीवन से,
संकट सहकर कोट जतन से।
जैसे बने मिटादो माता के सब दुःख महान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(४९)

भारत में जो जो बसते हैं,
धन्धा चाहे जो करते हैं।
भारत के शरीर में सब का बना हुआ स्थान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(५०)

धर्म, कर्म भी होकर न्यारे,
हम सब माँ के लाल दुलारे।
माँ के हित हम सब को होगा करना सब बलिदान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(५१)

आफत जब सिर पर आती है,
मती भ्रष्ट तब हो जाती है।
संकट मेघ भगादो, चेतो, बनो वायु बलवान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(५२)

सभी जाति को करना होगा,
मिलकर काम न डरना होगा।
तभी देश का हो सकता है सुखमय पुनरुत्थान ॥
करो मित्र भारत का गुण-गान ।

(५३)

आँख खोल कर देखो भालो,
बिगड़ी हालत जरा सम्हालो।
दौड़ सभ्यता की जारी है शामिल सभी जहान ॥
करो मित्र भारत का गुण-गान ।

(५४)

बाजी प्राण लगा कर सारे,
देश विश्व के न्यारे - न्यारे ।
सभी एक संग दौड़ रहे हैं इसे परीक्षा मान ॥
करो मित्र भारत का गुण-गान ।

(५५)

जो सब के आगे आवेगा,
सभ्य श्रेष्ठ वह कहलावेगा ।
दुनिया का वह नेता बन कर पावेगा सम्मान ॥
करो मित्र भारत का गुण-गान ।

(५६)

जग को जिसने ज्ञान सिखाया,
सदा श्रेष्ठ आदर्श कहाया।
वह क्या पड़ा रहेगा पीछे बन कर के अज्ञान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(५७)

यह न कभी होने पावेगा,
भारत ही आगे आवेगा।
कमर कसो कर्तव्य - क्षेत्र पर उतरो बन बलवान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

(५८)

उठो, उठो सब साज सजा लो,
शंख ध्वनि कर दौड़ लगा लो।
दौड़ो माँ की लाज बचाओ, कहो सभी जय हिन्दुस्तान ॥
करो मिल भारत का गुण-गान।

षष्ट दर्शन

(१)

सुख शान्ति न्यायकारी,
शासन विधान होगा।
संसार सौख्यकारी,
तेरा स्वरूप होगा ॥

शासन प्रजा करेगी, आदर्श राज्य होगा।
बहुमत प्रधान होगा, सर्वत्र न्याय होगा ॥
क़ानून जो बनेंगे, उनमें न स्वार्थ होगा।
वे सर्वमान्य होंगे, हित भी समान होगा ॥

प्रजातंत्र के नियम का पालन पुनीत होगा।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा ॥

(२)

प्रतिनिधि प्रजा चुनेगी, ज्ञानी गुणी जो होंगे।
फिर कार्य-भार देगी, जो योग्य जैसे होंगे ॥
इस भांति हाथ सबके, शासन-विधान होगा।
इच्छानुसार सब के, सब काम-धाम होगा ॥
छल, झूठ, जालसाज़ी का नाम शेष होगा।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा ॥

(३)

गौर वर्ण अथवा काला समान होगा।
न ऊंच नीच का भी कुछ भेद भाव होगा ॥
अस्पृश्यता मिटेगी हरिजन निहाल होगा।
सब को समानता का अधिकार प्राप्त होगा ॥
धर्म कर्म सब का इच्छानुसार होगा।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा ॥

(४)

मन्दिर पट खुलेंगे, पूजा सभी करेंगे।
जल साथ में भरेंगे, झगड़ा नहीं करेंगे ॥
सुख से सभी रहेंगे, शुभ भ्रातृ-भाव होगा।
दुर्गुण सभी मिटेंगे, निर्मल स्वभाव होगा ॥
परस्वार्थ रत रहेंगे मद का न लेश होगा।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा ॥

(५)

अहिंसा के उपासक, सब के सभी बनेंगे।
न नष्ट प्राणिजीवन, कोई कभी करेंगे॥
धन, बल, समस्त जीवन, उपकार हेतु होगा।
सब सत्य शीलधारी, मन में न क्रोध होगा॥
सबके लिये जियेंगे, उपकार-धर्म होगा।
संसार सौख्यकारी, तेरा स्वरूप होगा॥

(६)

न दीन और दुखिया, जग में कहीं दिखेंगे।
रोग, शोक संशय, सब साथ ही मिटेंगे॥
हृष्ट पुष्ट तन से, मन में न मोह होगा।
सुख से सभी रहेंगे, सपने न द्रोह होगा॥
सब ज्ञानवान होंगे, भय नाम को न होगा।
संसार सौख्यकारी, तेरा स्वरूप होगा॥

(७)

अन्न, वस्त्र, फल भी, भरपूर सब मिलेंगे।
दही, दूध, घी से, परिपूर्ण घर दिखेंगे॥
सन्तुष्ट, सुखी होंगे, भूखा न कोई होगा।
वस्त्र से सुसज्जित, वंचित न कोई होगा॥
प्रसन्न चित्त होंगे, उत्साह तेज होगा।
संसार सौख्यकारी, तेरा स्वरूप होगा॥

(८)

सुन्दर सदन सभी के, सब स्वच्छ मोदकारी।
सब की विनीत पत्नी, सन्तान शीलधारी ॥
स्त्री सदा पतिव्रत, पति भी सुशील होगा।
आचार नियम धारी, गुण ज्ञान शील होगा ॥
इनका समान जग में, सर्वत्र मान होगा।
संसार सौख्यकारी, तेरा स्वरूप होगा ॥

(९)

निज धर्म पालने को, आजाद सब रहेंगे।
निन्दा न धर्म की, कोई कहीं करेंगे ॥
धर्मों के सभी का, सम्मान मान होगा।
इच्छानुसार अपनी, सब खान - पान होगा ॥
धर्म के झगड़े में, सिर फोड़ना न होगा।
संसार सौख्यकारी, तेरा स्वरूप होगा ॥

(१०)

जग बाग में धरम के, कितने सुवृक्ष छाये।
फल - फूल से लदे हैं, सुख गन्ध से सुहाये ॥
फल तोड़ लो मजे से, जिसमें सुस्वाद होगा।
चखलो खुशी से रस को, जिसमें सुवास होगा ॥
रक्षा सभी करेंगे, यह बाग़ सब का होगा।
संसार सौख्यकारी, तेरा स्वरूप होगा ॥

(११)

दूकान यदि जगत में, धर्मों की हो मिठाई।
सज कर वहाँ रखी हों, सुख स्वाद की बनाई॥
सब खा सकेंगे जिसमें, जिसका सुप्रेम होगा।
धर्मों का यहाँ पर, जग के सुमेल होगा॥
धर्म के विषय में, जबरन ज़रा न होगा।
संसार सौख्यकारी, तेरा स्वरूप होगा॥

(१२)

धर्म तो अनेकों जग में रहे, रहेंगे।
वर्ण - भेद जग में जन्में सदा जियेंगे॥
बल बुद्धि के मुताबिक, शुभ धर्म - कर्म होगा।
सुख शान्ति का सुधा जल, प्यासे के पास होगा॥
चैतन्य जब सभी का, सुन्दर विकास होगा।
संसार सौख्यकारी, तेरा स्वरूप होगा॥

(१३)

औसत साल भर की, आमद निकाल करके।
सिद्धान्त के मुताबिक, निश्चित प्रमाण करके॥
कम से कम सभी पर, कर का करार होगा।
वह बोझ सा न होगा, सब को समान होगा॥
सुविधा के मुताबिक, सबसे वसूल होगा।
संसार सौख्यकारी, तेरा स्वरूप होगा॥

(१४

कर जो वसूल होगा, शुभ काम में लगेगा।
सब की सलाह लेकर, सब के लिए लगेगा॥
किसी खास आदमी का, इससे भला न होगा।
जिनसे लिया उन्हीं का, उपकार इससे होगा॥
आदर्श कर तरीका किसको न मान्य होगा।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा॥

(१५)

सरस्वती का मन्दिर, सब के लिए खुलेगा।
अज्ञान देश में तब, ढूँढे नहीं मिलेगा॥
स्त्री समाज का भी, कल्याण मान होगा।
सब शिक्षिता बनेंगी, घर में सुराज्य होगा॥
सन्तान दीर्घजीवी सर्वत्र मान होगा।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा॥

(१६)

छुआछूत का नहीं तब, कुछ प्रश्न ही रहेगा।
न ऊँच-नीच का तब, कुछ नाम ही रहेगा॥
अनमेल शादियों का, बिलकुल पता न होगा।
परदा प्रथा मिटेगी, घर जेल तब न होगा॥
सन्मान नारियों का लक्ष्मी समान होगा।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा॥

(१७)

अकाल में कभी तब, कोई नहीं मरेंगे।
सौ वर्ष तक जियेंगे, सुख भोग सब करेंगे॥
विधवा का यहाँ पर, नामोंनिशां न होगा।
पूरा स्वराज्य होगा, निश्चय सुराज्य होगा॥
घर में आनन्द होगा जग भी निहाल होगा।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा॥

(१८)

घी, दूध की बहेंगी, नदियाँ पुनीत प्यारी।
खेतों में अन्न होगा, संसार हो सुखारी॥
फल, कन्द, मूल से भी, घर, वन निहाल होगा।
स्वप्न में न दर्शन, हमको अकाल होगा॥
फूला - फला रहेगा जग में सुकाल होगा।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा॥

(१९)

नावें, जहाज, मोटर, नभ - यान भी बनेंगे।
विज्ञान - ज्ञान से हम, जग को सुखी करेंगे॥
कौशल - कला बढ़ेगी, विद्या का मान होगा।
इच्छा - कली खिलेगी, धन बेमिसाल होगा॥
फूट या कलह का जड़ से विनाश होगा।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा॥

(२०)

व्यवसाय वृद्धि होगी, नवज्योति भी जगेगी ।
भाँति भाँति की सब, चीजें यहाँ बनेंगी ॥
सारी जरूरतों की, करना सुपूर्ति होगा ।
जग में न चीज लाने, अब हमको जाना होगा ॥
सुन्दर टिकाऊ चीजें कम दाम उनका होगा ।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा ॥

(११)

मशीन अथवा पुरजे, तैयार हम करेंगे ।
उद्योगशील होंगे, आलस्य सब तजेंगे ॥
जिस माल का जगत में, ढूँढे पता न होगा ।
भारत पता रहेगा, तैयार माल होगा ॥
कोई न माल ऐसा, भारत बना न होगा ।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा ॥

(२१)

प्रकृति ने सभी कुछ, बस हिन्द को दिया है ।
इससे जगत ने जाने, क्या - क्या कहाँ लिया है ॥
देने से न घटता, दिन चौगना ही होगा ।
तकलीफ भी हुई क्या, सुख दूसरों को होगा ॥
उपकार कार्य करना बस धर्म एक होगा ।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा ॥

(२३)

संसार को खिला कर, तब हिन्द ने है खाया।
अज्ञान को मिटा कर, सुख, शान्ति, मान पाया॥
है कौन देश प्यासा, आया यहां न होगा।
जल-ज्ञान का न पाया, सुख शान्ति युक्त होगा॥
उद्देश्य शुभ रहा है सन्देश शान्ति होगा।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा॥

(२४)

अपने लिए नहीं पर जग के लिए जिया है।
कष्ट सह अनेकों उपकार बस किया है॥
अब तक किया है जैसा सिद्धान्त एक होगा।
उपकार सार जग का कल्पान्त एक होगा॥
परहित किया है जिसने वह अमर नाम होगा।
संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा॥

सप्तम् दर्शन

(१)

बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम् ।
संकट निवारक कष्ट नाशक,
तंत्र वन्देमातरम् ॥

अरुण प्राची में उदित रथ सूर्य का लेकर हुए ।
चन्द्रमा निस्तेज होकर शयन हित प्रस्तुत हुए ॥
प्रकृति सुख से खिल उठी रविदेव के दर्शन हुए ।
देखो किरण में जगमगाता मंत्र वन्देमातरम् ॥

बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम् ।

(२)

विटप अगणित जाति के फूले फले छहले हुए ।
भार से उपकार वृत्ती के झुके सम्हले हुए ॥
आनन्द से हैं झूलते उत्साह में उलझे हुए ।
कान में हैं वे सुनाते मंत्र वन्देमातरम् ॥

बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम् ।

(३)

आम्र वृक्षों में सुगंधित बौर है छाई हुई।
डाल पर बैठी है कोयल खूब इठलाई हुई॥
'कुहू'-'कुहू' ध्वनि से गाती है मौज में आई हुई।
पक्षी फुदुक कर सब सुनाते मंत्र वन्देमातरम्॥
बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम्।

(४)

शीतल सुगंधित पवन चारों ओर सुख से बह रहा।
चैतन्य जड़ मिल कर सभी से मधुर स्वर में कह रहा॥
मान या अपमान हो कर्तव्य हित सब सह रहा।
उत्साह, जीवन भर सुनाता मंत्र वन्देमातरम्॥
बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम्।

(५)

सरसों सुहावन खेत में फूली-फली निखरी हुई।
मन को लुभाती मान से जब झूलती बिखरी हुई॥
क़ालीन पीली बन मुलायम हृदय में हरखी हुई।
जाते वहाँ उनको सुनाती मन्त्र वन्देमातरम्॥
बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम्।

(६)

गिरिश्रृंग के सिर पर सोहाता है हरा साफा बड़ा ।
कलँगी लगी फुन्दा मनोहर फूल सा उस पर खड़ा ॥
झरने वहाँ निर्मल चमकते बर्फ कुछ उन पर कड़ा ।
झरझराते कह रहे सब मंत्र वन्देमातरम् ॥
बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम् ।

(७)

स्वच्छ जल से हैं भरी नदियाँ निराली मानिनी ।
नाद कलकल कर रहीं सुख में हुईं उन्मादिनी ॥
असंख्य जीवों की बनी हैं शान से वे स्वामिनी ।
सब को सुनाती प्रेम से हैं मंत्र वन्देमातरम् ॥
बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम् ।

(८)

देख कर आकाश में कुछ मेघ से आये हुए ।
मोर - दल प्रमुदित हुए सब पंख फैलाये हुए ॥
नृत्य वे करने लगे रस रंग में छाये हुए ।
गा भी रहे अब तो सुरीला मंत्र वन्देमातरम् ॥
बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम् ।

(९)

बावली या कूप से पानी निकाला जो गया।
निर्मल, निराला, नयन-रंजन, नेह-निधि-सा था नया॥
पीकर उसे उत्साह आया भगवान की कैसी दया।
भाव भूतल से उठे शुभ मंत्र वन्देमातरम्॥
बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम्।

(१०)

आकाश से पाताल तक भूतल जहाँ देखो वहाँ।
बस एक ध्वनि छाई हुई मेघ-सी उमड़ी महा॥
भाव कहिये, राग कहिये, गान भी होता जहाँ।
विश्व में सर्वत्र है बस व्याप्त वन्देमातरम्॥
बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम्।

(११)

गाय, भैंसी, बैल, कुत्ते, अश्व, गज, बिल्ली सभी।
प्रेम से हिलमिल अभय हो सोचते हैं वे अभी॥
उपकार ही में सार है जन्में जहाँ हम जब कभी।
भगवन्! सदा हम सब कहें बस मंत्र वन्देमातरम्॥
बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम्।

(१२)

अचर-सचर चर जगत के जिस बात को कहते सभी।
दैत्य - दानव देवता भूले नहीं जिसको अभी॥
आकाश में पाताल में भूलोक पर भी जब कभी।
ध्वनि एक है छाई हुई बस मंत्र वन्देमातरम्॥
बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम्।

(१३)

तब मनुष्य होकर हम न जाने कर्तव्य निज भूले हुए।
मद मोह में उन्मत्त होकर दम्भ में फूले हुए॥
विषय के अरु वासना के जाल में झूले हुए।
कहते नहीं हैं प्रेम से शुभ मंत्र वन्देमातरम्॥
बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम।

(१४)

भेद को तुम भूल जाओ एक स्वर से सब कहो।
चालीस कोटि हो संसार में परतंत्र होकर क्यों रहो॥
स्वावलम्बी सब बनो नित कष्ट को सुख से सहो।
कर्मयोगी बन कर कहो सब मंत्र वन्देमातरम्॥
बोलो सभी मिल शान्तिदायक,
मंत्र वन्देमातरम।

अष्टम् दर्शन

(१)

विनय यही जगदीश हमारी,

जग के सिरजनहार प्रभो।

भारत मां सब भांति सुखारी,

करदो जगदाधार प्रभो॥

शेष, महेश सभी ने गाया, तुझ में निशि दिन ध्यान लगाया।

देख तुझे बिरले ने पाया, माया ने सबको भरमाया॥

निर्गुण, सगुण तुझे बतलाया, वेद न पाते पार प्रभो।

जैसा जाना वैसा पाया, प्रकटा बारम्बार प्रभो॥

अनादि, अखंड, अनंत कहाया, सब सुख का तू सार प्रभो।

भारत मां सब भांति सुखारी, करदो जगदाधार प्रभो॥

(२)

घट-घट व्यापी तुझे बताते, बिना पैर के चलते पाते।

नयन-हीन सब लखते पाते, मुख-विहीन सब चखते पाते॥

वाणी-बिन वक्ता कहलाते, रहता बिन आधार प्रभो।

बिना कान के सुनते पाते, महिमा अपरम्पार प्रभो॥

भक्ति-भाव से तुझको ध्याऊं, सुमरूं बारम्बार प्रभो।

भारत मां सब भांति सुखारी, करदो जगदाधार प्रभो॥

(३)

मन्दिर, मसजिद, गिरजा जाते, भक्त वहाँ तेरे गुण गाते।
कोई तुझे राम में पाते, रूप रहीम किसी को भाते॥
कोई ईसा कह सुख पाते, करता सब का प्यार प्रभो।
भक्ति-भाव से तुझको पाते, वहाँ न भेद विचार प्रभो॥
ज्ञान, भक्ति दे दूर करो, मन के सभी विकार प्रभो।
भारत मां सब भांति सुखारी, करदो जगदाधार प्रभो॥

(४)

भक्ति-भाव से या तप करके, ज्ञान योग से या जप करके।
मन्दिर, मसजिद, गिरजा जा के, घर में रह जंगल जा करके॥
तुझे रिझाते जो जी भर के, संकट होते पार प्रभो।
इच्छा वर उनको दे करके, कर देता भव-पार प्रभो॥
दुख-संकट सारे हर लेता, तू मंगल-दातार प्रभो।
भारत मां सब भांति सुखारी, करदो जगदाधार प्रभो॥

(५)

रंकों को तू नृपति बनाता, सन्तान-हीन को पुत्र दिखाता।
जी में जिसके जो कुछ भाता, कष्ट-साध्य होने पर पाता॥
मुझे पुत्र, धन, राज न भाता, ज्ञान भक्ति निस्सार प्रभो।
जी में एक यही वर भाता, दे, करदो उद्धार प्रभो॥
भारत भूमि फले और फूले, भर उसका भंडार प्रभो।
भारत मां सब भांति सुखारी, करदो जगदाधार प्रभो॥

(६)

तीन लोक का राज करूंगा, क्या लेकर वेकाम प्रभो।
अष्ट-सिद्धि नवनिधी न लूंगा, तप करके निष्काम प्रभो॥
इन्द्रासन सुख नहीं चहूंगा, दम्भ-द्वेष का द्वार प्रभो।
देना हो तो यही मंगूंगा, भारत-हित शतबार प्रभो॥
भारत की इस पुण्यभूमि पर, सुख की हो बौछार प्रभो।

भारत मां सब भांति सुखारी, करदो जगदाधार प्रभो॥

(७)

पुनर्जन्म यदि देना मुझ को, रखना इसका ध्यान प्रभो।
दुनिया में मैं कहीं न जन्मूं, जन्मूं हिन्दुस्तान प्रभो॥
मनुष्य देह यदि मुझको देना, देना यह बरदान प्रभो।
भारत की हो भूमि झोपड़ी हो अथवा मैदान प्रभो॥
धूल लगाऊं धूल बिछाऊं, करूं धूल गुण-गान प्रभो।

भारत मां सब भांति सुखारी, करदो जगदाधार प्रभो॥

(८)

पशु ही बनूं तो परवस हूं, पर यही कामना एक प्रभो।
घास चरूं भारत की प्यारी, रहूँ हिन्द बस टेक प्रभो॥
पक्षी तनु का खेद नहीं, हो हिन्द वृक्ष की डार प्रभो।
पत्थर हूँ तो रहे हिन्द की, भूमि मेरा आधार प्रभो॥
भारत ही में जिऊं मरूं, देदो रूप अपार प्रभो।

भारत मां सब भांति सुखारी, करदो जगदाधार प्रभो॥

(९)

एक भावना एक कामना निशि दिन यही मनाऊं मैं।
मिटे दुःख भारत का सारा केवल यह वर पाऊं मैं॥
हिन्दू मुसलिम या ईसाई प्रेम करें सुख-सार प्रभो।
भेद, भाव, ईर्षा, मद अदिक मेटो सभी विकार प्रभो॥
मेरा तन, मन, धन सब लेलो, करो हिन्द उद्धार प्रभो।
भारत मां सब भांति सुखारी, कर दो जगदाधार प्रभो॥

(१०)

कर्मभूमि यह जन्मभूमि भी रही तुम्हारी कभी प्रभो।
इसे कहो बिसराया क्यों है नाता तोड़ा सभी प्रभो॥
मथुरा को क्या भूल गये, क्या भूले कारागार प्रभो?
अपने को अपनाने में है नहीं जरा भी भार प्रभो॥
कर्तव्य तुम्हारा तुम्हें सुझाता, समझो मत उपकार प्रभो।
भारत मां सब भांति सुखारी, करदो जगदाधार प्रभो॥